International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-07-2025, Accepted: 16-08-2025, Published: 01-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 60-62

धरती के व्याकरण को सस्टेन करने वाला कवि कुमार कृष्ण

डॉ प्रियंका भारद्वाज
सहायक प्रवक्ता हिंदी, राजीय महविद्यालय, सोलन हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी की समकालीन कविता इस परिदृश्य से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें कम से कम तीन या चार पीढ़ियों के महत्वपूर्ण कवियों की उपस्थिति है जो भारतीय चेतनाओं, चिंताओं, प्रार्थनाओं, आस्थाओं को एक खास समय के अंतर्गत घटित संवेदनाओं के चित्रण को विवरण के साथ प्रस्तुत करती है। एक सच्ची दुनिया के अत्याधुनिक जीवनधर्मी विवरण,जो अपने समय और परिवेश के गहरे मानवीय संवेदनात्मक प्रमाण देते हैं।
कुमार विकल, आलोक धन्वा,मंगलेश डबराल, अरुण कमल, राजेश जोशी, उदय प्रकाश, लीलाधर जगुड़ी, लीलाधर मंडलोई, मदन कश्यप के साथ कुमार कृष्ण एक बड़े कवि हैं जिनका मुहावरा लगातार मानवीय संबंधों की ज़मीन स्पर्श करके, उसका घर बनाने की ओर अग्रसर है। अनुभव, भाव, कथ्य और भाषा मिलकर इस भयानक समय में कुमार कृष्ण के कवि के भीतर विश्वास की ऐसी शक्ल बनाते हैं जिसके क्राफ़्ट से कवि पूरी ताकत के साथ असंवेदनशील दुनिया की भुरभुरी सच्चाई को सबके सामने व्यक्त करता है। एक मरणोन्मुखी समाज में हम जी रहे हैं और ऊपरी सतह पर चीजान के सहज और सही होने की दुहाई दे रहे हैं। जबकि धरातल पर हमें मालूम है कि जीवन वस्तुतः जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। साहित्य की मूलगामी अवधारणाएँ गाँधीवाद, मार्क्सवाद , पूंजीवाद से निकल कर पहले आतंकवाद,नवसाम्राजयवाद, उपभोक्तावाद, बाज़ारवाद आदि वैचारिक बहसों की ओर केन्द्रित रही और वर्तमान में जैविक संक्रमण के जाल में फंसकर विश्वग्राम (ळसवइंस टपससंहम) के स्वप्न को विकेन्द्रित होकर देखने के लिए विवश है। ऐसे विवश, संत्रस्त, भयानक एवम् आतंकित समय में कवि और कविता दोनों ही बाहरी आक्रमणों के वैचारिक हमलों से जूझ रहे हैं। इन तमाम खतरों के बावजूद समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, धूमिल के मुहावरे को नई धार, नई गति देने वाले कवि कुमार कृष्ण जटिल समय के बोध को अपनी कविताओं के माध्यम से पूरी इन्वाल्वमेंट के साथ विवेचित कर रहे हैं। अपनी काव्यगत प्रतिक्रियाओं के माध्यम से कवि आतंकित संसार के ब्लदपबपेउ (निराशवाद) में फँसे मनुष्य को मुक्त कर उनमें प्रेम,आस्था, विश्वास, संतोष, सौंदर्य,आनंद की स्थितियों के बीज बोता है।

मूल शब्दः ग्रामीण रागात्मक बोध, समकालीन कविता, किसानी संवेदना, मानवीय मूल्य और सम्बन्ध, जन चेतना, पहाड़ी आंचलिकता, बाज़ारवाद, पहाड़ी लोकजीवन, मध्यवर्गीय संघर्षद्य

हिंदी साहित्य के में हिंदी कविता की विकास यात्रा में हिमाचल के कवियों का विशेष योगदान देखने को मिलता है। जिनमें से कवि कुमार कृष्ण के पास समकालीन कविता के हस्ताक्षर कवि धूमिल के सामान पैना और धारदार मुहावरा है जो लगातार हिंदी कविता के वृद्ध बीजों में मन्त्र फूंक रहा है
धरती की मिठास को कविता में बचाना और ग्रामीण बोध से कविता की जड़ें सींच कर भूख की लड़ाई लड़ना कवि की कविताओं का केंद्रीय बिंदु है उनकी जुबान बार–बार किसान और रोटी, हल और हेंगा, बीज और गंध, गेंहू और आनाज जैसे लोकजीवन के मूलभूत पहलुओं की आग पर गर्म होती है । कवि कुमार कृष्ण लोकसंवेदनाओं का कुम्हार कहना अनुचित न होगा।
समकालीन हिन्दी कविता में कुमार कृष्ण मनुष्य की संवेदनाओं, भावनाओं, अनुभूतियों की पड़ताल की हरकत में हैं। उनमें मनुष्यता से जुड़े सन्दर्भों,घटनाओं, प्रसंगों और परिवेश के भौगोलिक परिदृश्यों को पुनः पुनः याद करने का एक नॉस्टेलजिक आर्ट है। हिन्दी– कविता की वर्तमान दुनिया में कुमार कृष्ण की कविताएँ धरती के बीज,धरती के मंत्र,धरती के यंत्र और धरती के तंत्र के बनते बिगड़ते, परिवर्तित होते व्याकरण को सस्टेन करती है । वे यथावत दृश्यों, उनकी सम्वेदनाओं के ग्रॉफ और विषयवस्तु के रूपाकार को अपनी कविता में अंत तक थामें रखते हैं–

> नमक और रोटी नहीं हैआदमी का रहस्य उसके पास होनी चाहिए बच्चों की शरारतें बुजुर्गों की यादों का बटुआ प्यार और नफ़रत के रंग–बिरंगे छाते उसके पास होने चाहिए बेशुमार दरवाज़े जो खुल जाएँ सिर्फ एक बार खटखटाने पर'[1]

कुमार कृष्ण की कविताओं का बोध बिना काव्यात्मक उछाल और पाठकों को उलझाए 'प्यार और नफ़रत के रंग–बिरंगे छातों' के साथ जीने के लिए हाई टोन के साथ दृश्यों, बिम्बों का मूर्तीकरण करने लगता हैं। घटनाओं का एक वास्तविक संगणक विस्तार से हमारे सामने खुलने लगता है और मनुष्य की चिंताएं नमक और रोटी के मुहावरों को तोड़ने लगती है। कुमार कृष्ण का कवि एक रैखिक छटपटाहट के साथ मनुष्य का मनुष्यता से रिश्ता समझाता है–

> भयानक समय में कवि नहीं लिखता कविता वह बनाता है
> घोंसले बचाई जा सके, जहाँ मनुष्यता सुरक्षित रह सके सपनें
> छोटी–छोटी खुशियों के बीज हिम्मत हौंसला और उम्मीद की
> गुदड़ी' [2]

हिन्दी की समकालीन कविता इस परिदृश्य से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें कम से कम तीन या चार पीढ़ियों के महत्वपूर्ण कवियों की उपस्थिति है जो भारतीय चेतनाओं, चिंताओं, प्रार्थनाओं, आस्थाओं को एक खास समय के अंतर्गत घटित संवेदनाओं के चित्रण को विवरण के साथ प्रस्तुत करती है। एक सच्ची दुनिया के अत्याधुनिक जीवनधर्मी विवरण,जो अपने समय और परिवेश के गहरे मानवीय संवेदनात्मक प्रमाण देते हैं।
कुमार विकल, आलोक धन्वा,मंगलेश डबराल, अरुण कमल, राजेश जोशी, उदय प्रकाश, लीलाधर जगुड़ी, लीलाधर मंडलोई, मदन कश्यप के साथ कुमार कृष्ण एक बड़े कवि हैं जिनका मुहावरा लगातार मानवीय संबंधों की ज़मीन स्पर्श करके, उसका घर बनाने की ओर अग्रसर है। अनुभव, भाव, कथ्य और भाषा मिलकर

इस भयानक समय में कुमार कृष्ण के कवि के भीतर विश्वास की ऐसी शक्ल बनाते हैं जिसके क्राफ़्ट से कवि पूरी ताकत के साथ असंवेदनशील दुनिया की भुरभुरी सच्चाई को सबके सामने व्यक्त करता है–

'यह वही जगह है जहाँ धीरे–धीरे मरता है आदमी धीरे–धीरे काठ होता है देश'[3]

आदमी और देश का धीरे–धीरे काठ होना जैसा मुहावरा मूलतः उन्हें एक ओर जनवादी कवि के रूप में स्थापित करता है, वहीं दूसरी ओर समकालीन कविता के विमर्शों में दखल देने वाले कवि के रूप में भी पहचान बनाता है। कुमार अंबुज की तरह कवि कुमार कृष्ण की कविताएँ लगातार भूख, मजदूरी, किसान, और बेहतर जिन्दगी की तलाश में भटकते हुए ग्रामीण लोगों के पलायन की व्यथा को अपनी कविता में स्थान देती हैं। उनकी कविताओं की काव्य– संवेदनात्मक हरकत मानवीय जिजीविषा,करुणा, प्रेम,उत्साह, संघर्षशीलता के साथ साथ मध्यमवर्ग के जीवन की विडम्बनाओं को व्यक्त करती है–

'वह लड़ता रहा लगातार एक छोटी –सी लड़ाई छोटे लोगों के लिए छोटी बातों के लिए बनाता रहा एक खूबसूरत तस्वीर आने वाले कल की सिलता रहा वह पंजाबी फकीर रावलपिंडी की फटी हुई लोई निभाता रहा कलर्क और कविता का रिश्ता'[4]

कुमार कृष्ण ने धूमिल की तरह भाषा को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया है। उनकी कविताएं युवा कवियों की एक पूरी पीढ़ी को नई दिशा दे रही है। कुमार कृष्ण का कवि बाज़ारवादी दर्शन से उपजे नव–उपभोक्तावादी संस्कृति की त्रासदी को अपनी काव्यात्मक चिंताओं के साथ प्रस्तुत करते हैं। कुमार का कवि ' सुपरस्ट्रक्चर' को जानते हुए भी ग्रामीण रागात्मक बोध, किसानी–संवेदनाओं, मध्यवर्गीय चिंताओं, सर्वहारा के संघर्षो, मजदूरों के जटिल संसार की वास्तविकताओं की एक जटिल और अधिक व्याकुल कर देने वाली कविता लिख रहा है–

'आग के पर्व पर जो नहीं करते मिठाई का इंतजार वे भी देखते हैं रेशमी रजाई के सपने वे भी करते हैं दाल–भात से लक्ष्मी की पुश्तैनी–पूजा यह दूसरी बात है उनके घर न कभी लक्ष्मी आती है न रजाई वे पुआल की टहनियों पर ही उगा लेते हैं सपनों के अनगिनत फूल।'[5]

इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो ग्रामीण क्षेत्रों की एक बुनियादी संवेदनशीलता और मानवीय व्यवहार को कवि अपनी कविता में तोड़ता है। कवि कुमार कृष्ण की कविताओं के वस्तुजगत का सम्पूर्ण दर्शन अपनी कविताओं को हर बार डिकंस्ट्रक्ट करने में हैं। यही कारण है कि उनकी मानवीय चिंताओं का कन्टेंट कविता में विखंडित होने के बाद, दोहराए जाने पर भी शब्द और अर्थ के बीच के अंतर और संबंध को नवीनता प्रदान करता चलता है। कुमार की कविताओं के चित्र विखंडित होने पर और अधिक संवेदनशीलता के साथ मनुष्यता के पास से होकर बहने लगता हैं

साठ बरस का आदमी लौट जाना चाहता है– एक छत के पास वह छुपा लेना चाहता है– अनगिनत रोटियाँ किसी मजबूत दरवाजे के अंदर वह लौट जाना चाहता है उस आग के पास जो सिर्फ उसकी अपनी हो वह लौट जाना चाहता है–ठहाकों के पास'[6]

धरती की मिठास, रिश्तों की लोई, सांवली रोटियों के साथ परम्परागत चूल्हे की आग बचाता और कविता में बार–बार गेहूँ के दाने, कोदे की रोटी के साथ–साथ लेवे के कपड़े, काफल के पेड़, पुआल, लकड़ी, घास, पानी पर बात करता, आलू,अदरक के गुम होते बीजों के साथ–साथ गाय की थन से उतरते दूध और आँगन में तुलसी के पौधों के इतिहास को भूख के खिलाफ लड़ती मुट्ठियों की आवाज़ के साथ चित्रित करता कवि कुमार कृ ष्ण सच में समकालीन कविता के भीतर अपने पुरखों की जंग लड़ता एक बड़ा कवि है। उनकी कविताओं का पर्सोना इन्टरनेट के युग में हर रोज बदलती दुनिया के सामने एक सुन्दर बीते यथार्थ को वर्णित करती है। लोक आग के तवे पर पकता सुंदर जीवन,जिसे जब–जब पाठक पढ़ता है तो सोचने लगता है –

'हम जब भी जाते हैं उसके पास वह सगी माँ की तरह छुपा लेता है अपनी गोद में. दुनिया का सबसे कुरूप, सबसे खूबसूरत सबसे दुर्बल, सबसे शक्तिशाली दोस्त का नाम है लेवा उसके पास पहुँचकर मैं हमेशा महसूस करता हूँ जिंदगी की गंध मेरे घर की पूरी एलबम है लेवा लेवा है परिवार का वंशवृक्ष पूरे परिवार का भगवान"[7]

कुमार कृष्ण की कविताओं में गाँव पूर्ण रूप से उपस्थित है और उसमें उपस्थिति है – स्थानीय मनुष्यता के स्वप्नों की अनगिनत कहानियाँ। इनकी कविताएँ जिस भाव जगत पर बात करती है उसके भीतर ही पूरी दुनिया को विश्व–ग्राम बनने की परिकल्पना के संकट को भी उभारती चलती हैं। समकालीन कवियों की तरह कुमार कृष्ण की कविताएँ ग्रामीण परिवेश के भीतर से बाजारवाद पर सीधा हमला करती हैं। संवेदनशून्य सभ्यता के युग में कवि कुमार कृष्ण कृत्रिम अभिजात्य वर्ग के समक्ष विवेकपूर्ण ढंग से मानवीय चिंताओं के अनगढ़ दृश्य खोलते हैं–

श्तुम चुप क्यों हो दोस्त... इससे पहले कि वशिंगटनिए कूड़ा घर में बदल डाले तुम्हारा हस्तिनापुर तुम कविता के खेतों में कलकत्ता की पटसन बोना शुरु कर दो इससे पहले कि सुष्मिता सेन की टूटी चप्पल बिकने लगे जनपथ पर तुम ओटावा के बनिए की गिरफ्तारी के इंतजाम में जुट जाओ इससे महले की ठूंठ हो जाए पृथ्वी की संवेदना तुम शिकागो रेडियो के मुँह में रुई ठूंसने की साजिश रचो इससे पहले कि नीम के पेड़ की छाँव को भूलने लगे जमीन तुम कविता के बंकर में कूद जाओ'[8]

ये कविताएँ वास्तव में समय और समाज के बीच आए एक बड़े अंतर के ताने –बाने के रेशों को खोलती हैं। इक्कीसवीं सदी की भयावहता के समय में जीवन मूल्यों के संक्रमण, उसके अनेकानेक प्रश्नों की जीवंत अभिव्यक्ति, समाज और मनुष्य के बीच गहराती खाईयाँ, उपेक्षित एवम् ह्रास होती सभ्यता की सामाजिक, पारिवारिक उथल–पुथल को विविध आयामों के साथ कवि कुमार कृष्ण की कविताएं उघाड़ती हैं। इस तरह उनकी संवेदनाओं का स्तर उपन्यास विधा से भी अधिक गहरा एवम् बहुआयामी होता जाता है। इनकी कविताओं के छोटे–छोटे घर उसके भीतर रहने वाले मनुष्य की भूख, गरीबी, विश्वास–अविश्वास,आस्था–अनास्था,प्रार्थना, हर्ष–विषाद, उनके सुख दुःख, तकलीफ के साथ उनकी बेबसी की व्याकुलता को यथार्थ की छटपटाहट के साथ अभिव्यक्त करते हैं।

निष्कर्षतः कुमार कृष्ण समकालीन काव्य में जनमानस को चेताने वाला ,जगाने वाला, समझाने वाला कवि है। देखा जाए तो कबीर, निराला, धूमिल, केदारनाथ सिंह, विनोद कुमार शुक्ल, एकान्त

श्रीवास्तव,लीलाधर जगूड़ी, आदि कवियों ने कविताओं के माध्यम से आम आदमी की मानसिक पीड़ा, संत्रास, बेचौनी, प्रेम की चाहत, जैसी भाव वृत्तियो को शब्द चित्रों, प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से काव्य का सृजन किया है। कवि कुमार की कविताओं में हिंदी साहित्य के उन तमाम उत्कृष्ट साहित्यकारों की प्रतिच्छाया भी नजर आती है। उनमें धूमिल जैसा ठाठ है तो उदय जैसा भाषाई बांकपन भी,मदन कश्यप जैसा ठहराव है तो केदारनाथ सिंह जैसा काव्यात्मक विस्तार भी ।

अतः मेरी दृष्टि में विश्वग्राम की परिकल्पना के युग में कुमार कृष्ण की कविताओं में हाशिए पर खड़ा गाँव है जो कवि की चेतना और कविता दोनों के केन्द्र बिन्दु में है। इस दृष्टि से यदि हम कवि की कविताओं की जाँच करें तो पायेंगें कि उनकी ज्यादातर कविताएँ गुम होती संवेदनाओं के साथ–साथ गुम होती पृथ्वी पर बात करती है जिससे धीरे–धीरे उसके खेत, खलियाहन, गाँव, परिवार, मवेशी, पेड़–पौधे, जंगल, पुआल, अदरक, बीज सब गायब हो रहे हैं। का कवि विलुप्त संस्कृति के बीच अपनी संस्कृति की जड़ों को रिटेन करने की लगातार एक जटिल कोशिश कर रहा हैं। उनकी कविताएँ असंभावनाओं के खिलाफ सम्भावनाओं की तलाश की कविताएँ हैं। अतः उन्हें धरती की मिठास के साथ–साथ धरती के व्याकरण को सस्टेन करने वाला कवि कहना अनुचित ना होगा।

संदर्भ संकेत

1. कुमार कृष्ण, खुरों की तकलीफ, पृ. 85 ।
2. कुमार कृष्ण, इस भयानक समय में, पृ. 25 ।
3. कुमार कृष्ण, पक्षी की चोंच के दाने में उड़ रहा है गाँव, पृ. 178–179 ।
4. कुमार कृष्ण, उम्मीद का पेड़, पृ. 68 ।
5. कुमार कृष्ण, पहाड़ पर नदियों के घर, पृ० 16
6. वही, पृ० 47–48 ।
7. कुमार कृष्ण, घमर, पृ. 16–17 ।
8. कुमार कृष्ण, पहाड़ पर नदियों के घर, पृ. 32 ।